क्या होता है जब हम पढ़ते हैं ?

❑ तरुण हृदय

'क्या होता है जब हम पढ़ते हैं ?' इस प्रश्न पर हम सामान्यत: विचार नहीं करते । असल में यह प्रश्न अत्यंत गंभीर और जटिल है । 'जटिल' इसलिए कि 'पढ़ने की प्रक्रिया को समझने के लिए ज्ञान-विज्ञान के कई अनुशासनों की मदद लेनी अनिवार्य होती है यह सब एक सामान्य पाठक के लिए संभव नहीं है । प्रस्तुत लेख हमें पढ़ने से संबंद्ध प्रक्रियाओं के बारे में कुछ संयोजित जानकारियां देता है । साथ ही, पढ़ने की प्रक्रिया को ज्ञान की निमिर्ति, संवाद और संप्रेषण तथा दृश्य-माध्यमों की चुनौती के बीच रखकर देखा गया है । शिक्षा के लिए यह एक महत्वपूर्ण संदर्भ है ।

''33^0 के तापमान से तप्त बुलबर्ड बोर्डन
पूरी तरह निर्जन था । आगे नीचे की तरफ
बहती सेंट मार्टिन नहर,
भान करा रही थी स्याह पानी की
एक सीधी खिंची लकीर का और इसके
बीचों बीच थी एक नौका - लकड़ियों से
भरी पूरी, साथ ही किनारों पर पीपों की
दो कतारें ।''

जब आप गुस्ताव फलाओबर्ट के उपन्यास ''बूवर्ड एंड पेक्यूचेट' के आरंभिक वाक्यों को पढ़ते हैं तो क्या ऐसा नहीं लगता कि आप कोई असाधारण सा काम कर रहे थे । फिर भी कुछ क्षणों के लिए आप अपने दिमाग को ऐसा जटिल व्यायाम करा रहे होते हैं जिसका किसी भी वैज्ञानिक ने अभी तक कोई जिक्र नहीं किया है । वस्तुत: हमारे पढ़ते समय क्या घटता रहता है इस बात को भली भांति समझने के लिए इसके पीछे सक्रिय नेत्र-विज्ञान, शिक्षाशास्त्र प्रणाली, तंत्रिका-विज्ञान, भाषा-विज्ञान, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, विचारों के आदान-प्रदान से संबंधित विज्ञान और दूसरे अनेक विज्ञानों को भी समझना पड़ता है ।

एक नागरिक के रूप में हमारा जीवन, हमारे कार्य, खाली समय में किये जाते क्रिया कलाप लगभग सभी कुछ शब्दों के छपे रूप पर निर्भर करते हैं । चहल कदमी भी करें तो हमसे इतनी अपेक्षा तो की ही जाती है कि हम अपनी राह में लगे पोस्टरों, दुकान के साइन बोर्डों, सड़क के नामों को तो पढ़ते हुए ही घूमेंगे। लेकिन पढ़ना जैसा कि आज मालूम है गत निकटवर्ती समय में एक साधारण सी परम्परा के रूप में निभायी जाती रही है । ग्रीक व रोमन समाजों में व्यावसायिक पाठक हुआ करते थे जो उच्च स्वर से पढ़कर सुनाते थे और मध्यकाल के प्रारंभिक वर्षों तक भिक्षुक भी यही कार्य करते रहे । क्योंकि तत्कालीन लेखन में शब्दों को साथ सटा कर लिखने तथा संक्षिप्त रूप से और बिना शब्दों के बीच दूरी छोड़ते हुए अथवा विराम चिन्हों का इस्तेमाल किये बगैर लिखने की प्रथा प्रचलित थी, अत: ऐसे लेखन का उपयोग के लिए इस कला में निपुण आदमियों की जरूरत पड़ती थी।

फ्रांसिसी भाषाविद् लियोने बेलेन्ज के अनुसार अच्छी पांडुलिपियों के फलस्वरूप सन 1000 तक 'पढ़ना' प्रधानत: चाक्षुष हाने की अपेक्षा एक वाक्संबंधी क्रिया ज्यादा मानी जाती थी । सन् 1440 के आसपास छपाई की तकनीक का विकास हो जाने पर सुलेख संबंधी सुस्पष्टता व सुंदरता और भी बढ़ गयी । लेकिन 19 वीं शताब्दी तक पश्चिमी देशों में भी पढ़ना एक बहुत छोटे से वर्ग के एकाधिकार की बात बनी रही ।

दुर्भाग्य से पढ़ना अक्सर ही अक्षर दर अक्षर उच्चारण कराते हुए सिखाया जाता रहा, यहां तक कि अनेक वयस्क भी पढ़ते हुए 'शब्द' की पूरी-पूरी ध्वनि-उच्चारण की आदत नहीं छोड़ सके हैं। आम आदमी जबकि करीब 500 शब्द प्रति मिनट की गति से पढ़ सकते हैं और अत्यधिक कुशल पाठक 1000 शब्द प्रति मिनट की गति से, वहीं शब्दों को भलीभांति उच्चारण करके पढ़ने पर यह गति 100 से 150 शब्द प्रति मिनट तक रह जाती है ।

एक उछाल के साथ पढ़ना

सन् 1900 से कुछ पहले नेत्र चिकित्सक एमाइल जावाल ने खोज की कि पढ़ते समय हमारी आंखे छपी पंक्तियों पर बाईं से दाहिनी ओर सहजता से नहीं फिसल जातीं, बल्कि पंक्ति के साथ-साथ तेजी से कुछ उछलती हुई-सी चलती हैं। बिना हमारे जाने ही हमारी आंखे एक पंक्ति को छह या सात भागों में बांटते हुए पढ़ती हैं। इसके हर भाग में लगभग 10 अक्षर होते हैं । दृष्टि एक सैकेण्ड

के ढाई लाखवें हिस्से में घटित होते मस्तिष्क के अस्पष्ट स्पंदनों की गति से एक खंड से दूसरे खंड की ओर उछलती हुई बढ़ती है।

प्रत्येक अक्षर समूहों को पहचानने में हमें सैकेण्ड के एक तिहाई या एक चौथाई हिस्से के बराबर ही समय लगता है । अकेले अक्षरों के साथ हम करते ही क्या हैं ? कुछ भी नहीं । उन्हें तो हम देखते भी नहीं । फ्लाओबर्ट के उपरोक्त गद्यांश को पढ़ते हुए आप न + ह + र को रुक रुक कर नहीं जोड़ते । आपने तुरंत पूरे 'नहर' शब्द की आकृति पहचान ली । केवल मात्र अपरिचित शब्द के ही एक-एक अक्षर पढ़े जाते हैं । वास्तव में 1843 में एक भाषाविद् लेक्लेयर ने पाया कि अगर शब्दों को क्षैतिज रूप में आधा काट दिया जाए तो भी ऊपरी भाग को देखकर ही हम सही शब्द व उसका अर्थ पहचान लेंगे ।

पढ़े गये विषय को हमारा मस्तिष्क कैसे समझता है ? आंख के पृष्ठभाग की भीतरी झिल्ली 'रेटिना' को 'दृष्टि पटल' कहते हैं। यह दृष्टि पटल 500 मिलियन (50 करोड़) ग्रहणशील कोशिकाओं से बनता है और सामने पड़ते शब्दों को तुरंत पहचान लेता है । और इन आकृतियों को लगभग विद्युतीय संवहन से गुजारते हुए मस्तिष्क तक पहुंचा देता है । मस्तिष्क की अरबों कोशिकाएं 'तंत्रिका कोशिकाएं' कहलाती हैं । मस्तिष्क का आश्चर्यजनक जटिल परिगम तथा तीव्र गति अर्जन की इच्छा पाले यह केन्द्र सीधे तौर पर शब्दाकृतियों को दो समूहों में बांट कर अपने स्मृतिपटल पर अंकित कर लेता है ।

इसमें पृथक 'तंत्रिका कोशिका' भी विभिन्न संदेशों व सूचनाओं को स्वयं संकलित कर बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर देती है। अक्सर हमारा मस्तिष्क हमारी आंखों द्वारा वाक्य का प्रारंभ पढ़ते हुए ही वाक्य के अंत को भांप लेता है । जैसा कि सत्रहवीं शताब्दी के दार्शनिक लेखक रेने देकार्त ने एक स्थान पर लिखा था, ''जब खिड़की से हमारी निगाह हैट पर पड़ती है तो हम इससे यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि कोई आदमी जा रहा है ।'' इसी तरह से भाषाविद् भी बताते हैं कि 'और' 'तो' 'इस प्रकार', 'वास्तव में' आदि छोटे छोटे शब्दों का प्रयोग हमारे लिए एक साईन पोस्ट की तरह काम करता है । जो हमें आगाह करता है कि आगे क्या आने वाला है और तीव्रता से हमारी गति आगे की ओर बढ़ा दी जाती है ।

लेकिन अध्ययन तकनीक के बिना भी हम सभी बोलने की अपेक्षा पढ़ते अधिक तीव्रता से हैं । जबकि एक आकाशवाणी या दूरदर्शन का प्रसारणकर्ता/उद्घोषक एक घंटे में 1000 शब्दों की गति से वार्ता करता है वहीं एक औसत आदमी इससे तीन गुनी अधिक तीव्रता के साथ पढ़ सकता है । इस प्रकार दूरदर्शन पर 20 मिनिट तक प्रसारित होने वाले समाचार में अखबार के कुल तीन कालमों में दी गई जानकारी के बराबर ही सूचनाएं सिमट पाती हैं। इससे ही यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों आकाशवाणी, चलचित्र और दूरदर्शन कभी पुस्तकों का विकल्प नहीं बन सके ।

असीमित क्षमता

पेरिस के रेने डेकार्टस विश्वविद्यालय के प्रो. पियरे ओलेरां कहते हैं 'मस्तिष्क की तुलना अक्सर कम्प्यूटर के साथ की जाती है ।' 'लेकिन कम्प्यूटर वही करता है जिसके लिए उसे निर्देशित किया गया हो जबकि बिना पूर्व तैयारी के कुछ निर्णय लेने के विचार या समझने में मस्तिष्क की क्षमता असीमित होती है ।' पुन: कम्प्यूटर पर से शब्द एक एक अक्षर कर गायब होते हैं । उदाहरण के लिए यह वाक्य एक पहेली है जिसे मानव मस्तिष्क ही सुलझा सकता है : 'When he saw the brown trunk he got a shock .

अगर यह वाक्य किसी एक समूह विशेष के लोगों को सुनाया जाए तो उनमें से कुछेक ट्रंक का अर्थ पेड़ के तने से , जबकि कुछ दूसरे बक्से या पेटी से निकालेंगे। परंतु यदि समूह को यह बता दिया जाए कि यह घटना जंगल की है, तो सभी की तंत्रिका कोशिकाएं पलक झपकते ही सही अर्थ 'हाथी की सूंड' को पकड़ लेंगी । समझते हुए पढ़ने का अर्थ होता है पाठ्यवस्तु और उसके संबंध में हमारी स्मृति में पहले से विचारों और धारणाओं के बीच परस्पर सामंजस्य बैठाना ।

'स्मृति' की कार्यप्रणाली के बारे में हम अभी भी बहुत कम समझते हैं पर दो तरह की स्मृतियों के बीच हम भेद जरूर कर सकते हैं । वह स्मृति जिसे वैज्ञानिकों ने हमारी 'अल्पकालिक स्मृति' का नाम दिया है, अत्यधिक क्षीण होती है । उदाहरणार्थ कुछ पढ़ने के 20 सैकिण्ड के बाद हम 15 शब्द भी नहीं याद रख पाते । इसलिए कभी कभी हम वाक्य पूरा पढ़ने से पहले ही वाक्य की शुरूआत भूल जाते हैं। खासतौर से नये पेज पर पिछले पेज का अधूरा वाक्य पढ़ते हुए हमें फिर पिछला पेज पलटना पड़ता है ।

दूसरी तरफ हमारी 'दीर्घकालीन स्मृति' विलक्षण होती है । जब हम कुछ पढ़ते हैं तो वो यही स्मृति हम तक छना सार पहुंचाने तथा अनुपयोगी को छोड़ देने, व्यक्तिगत तौर पर मतलब रखने वाले विषय के तत्व को भंडारित करने के लिए सरलीकृत करने, हमारी पूर्व अर्जित जानकारी से इसकी तुलना करने और यदि यह अचेतन मनोवैज्ञानिक सांचों में ढाली जा रही है तो इसे परिवर्तित या उपेक्षित करने में हमारी मदद करती है । छांटने, मिलाने, निकालने, एकीभूत

करने या पचाने और संकलित करने के ये दुष्कर कार्य दीर्घकालीन स्मृति द्वारा अकल्पनीय गति के साथ पूरे किये जाते हैं। जब हमारी आंखें पाठ्यवस्तु को पढ़ती होती हैं तभी हमारा मस्तिष्क यह अनुमान भी करता रहता है कि अब आगे उसे क्या पढ़ना है ।

इन कार्यों की अत्यधिक जटिल कड़ी के अंत में केवल एक मोटा और समग्र सरसरी अर्थ ही ग्रहण किया जा पाता है, लेकिन महीनों, सालों के अंतराल के बाद तो एक छोटी सी घटना भी हमारे एक बार के पढ़े विषय को पुन: कौंधा जाती है । संकेत विज्ञान विद रोलैंड बार्थेस ने इस बात का अवलोकन किया तो पाया कि बुद्धि की समस्त कुशलताओं का आह्वान करते हुए लिखित सामग्री एक पाठक को मात्र एक पाठक ही नहीं रहने देती, पर एक सृजनकर्ता बना डालती है ।

शब्द चित्र

कई लोग पढ़ते हुए सिर्फ देखते हैं । एक मनोवैज्ञानिक शोधकर्ता माईकेल डेनिस ने इस बात पर प्रयोग किये हैं कि पढ़ते हुए किस प्रकार पढ़े विषय से संबद्ध चित्रण मानस पटल पर उभरते चले जाते हैं । वे कहते हैं, 'आश्चर्य तो यह है कि वाक्य हमेशा हमारी दृष्टि या मन की उड़ान से कुछ कम ही वर्णनात्मक होते हैं।'' उदाहरणार्थ जब हम यह पढ़ते हैं, ''चील ने आदमी की तरफ गोता लगाया'' तो हममें अधिकांश की कल्पना उड़ान भरती है कि पक्षी अपने पंजे फैलाए गोता लगाता बढ़ा आ रहा है। और शायद यह भी कि आदमी अपनी बाहों से स्वयं को बचाने का प्रयास कर रहा है । हालांकि यह सारा कुछ उस वाक्य में कहीं नहीं लिखा है।

छोटे छपे संकेतों के पीछे छुपी वास्तविकता का पता लगाने की इस रहस्यमयी सामर्थ्य का हमारी मेधा के साथ किसी प्रकार का संबंध होना जरूरी नहीं होता । यह तो तेज दौड़ पाने जैसी एक योग्यता है । और जो पाठक अत्यधिक पूर्वावलोकन व मनोचित्रण के अभ्यासी होती हैं उनकी स्मृति भी सबसे अमोघ हुआ करती है। विभिन्न प्रयोगों से भी यह सिद्ध हुआ है कि जो व्यक्ति औसत पाठकों से दस गुनी तीव्र गति के साथ पढ़ते हैं उन्हें उन औसत पाठकों की तुलना में याद भी दोगुना अधिक रहता है ।

तेज पढ़ने वाले ही सामान्यतया अधिक पढ़ने वाले भी होते हैं । कहा जाता है बाल्जाक पुस्तक पर पुस्तक चाट जाया करते थे, जाहिर है उनकी गति विलक्षण थी । कुछ समय पूर्व ही फ्रांसीसी विज्ञान-संवाददाता एवं लेखक जैक्यू बर्जी तीस मिनट में 200 पेजों की किताब पढ़ मारते थे और फिर इसके बारे में यथा तथ्य बात भी कर सकते थे । जॉन एफ. कैनेडी राजपत्रों को अत्यधिक तीव्र गति से पढ़, समझ व पचा लेने में समर्थ थे और व्हाइट हाउस में प्रवेश करने के बाद वे अपने कर्मचारियों पर भी तीव्र पठन का अभ्यास करने के लिए जोर देते थे । आज यह तकनीकी हमें पहले से ही उपलब्ध है, हम सभी बोलने की अपेक्षा पढ़ते अधिक तीव्रता से हैं । यद्यपि हम सभी इसकी मदद से बाल्जाक या कैनेडी तो नहीं बन सकते, पर अगर विधि का समुचित तरीके से अभ्यास करें तो अपनी पठन-गति अवश्य बढ़ा सकते हैं ।

लेकिन अध्ययन तकनीक के बिना भी हम सभी बोलने की अपेक्षा पढ़ते अधिक तीव्रता से हैं । जबकि एक आकाशवाणी या दूरदर्शन का प्रसारणकर्ता/उद्घोषक एक घंटे में 1000 शब्दों की गति से वार्ता करता है वहीं एक औसत आदमी इससे तीन गुनी अधिक तीव्रता के साथ पढ़ सकता है । इस प्रकार दूरदर्शन पर 20 मिनिट तक प्रसारित होने वाले समाचार में अखबार के कुल तीन कालमों में दी गई जानकारी के बराबर ही सूचनाएं सिमट पाती हैं। इससे ही यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों आकाशवाणी, चलचित्र और दूरदर्शन कभी पुस्तकों का विकल्प नहीं बन सके ।

पठन शक्ति

दार्शनिक एवं इतिहासकार एलिजाबेथ बैडिन्टर कहती हैं, ''नए ज्ञान और मानव अनुभवों की खोज का मार्ग खोलें तो हम पाएंगे कि अध्ययन करने से हम अपना जीवन अधिक समृद्ध, भरापूरा व अधिक संतोषी बना सकते हैं ।''

इसमें हम यह भी जोड़ सकते हैं कि यह भरापूरा जीवन व्यक्तिश: हमारा ही होता है । एक फ्रांसीसी स्कूल अध्यापिका का कहना है, '' जब मेरे विद्यार्थी मुझे किसी दूरदर्शन कार्यक्रम के बारे में बताते हैं तो मैं देखती हूं कि एक प्रकार के विषय को व्यक्त करने के लिए सभी आवश्यक रूप से एक से शब्दों का इस्तेमाल करते हैं । लेकिन मैंने कभी दो विद्यार्थियों को एक ही तरह से कोई एक पुस्तक पढ़ते नहीं देखा ।''

संप्रेषण विशेषज्ञ फ्रांस्फॉयस रिशाओडू कहते हैं ''छपाई का अविष्कार हो जाने के बाद से बोल कर अभिव्यक्ति देने वाले शब्दों से हमारा बचाव हो गया है और इसने इच्छा की स्वतंत्रता व जटिल विश्लेषणात्मक भाव को भी पोषित कर रखा है । मस्तिष्क की सभी आधुनिक सफलताएं इन्हीं दो विशेष अधिकारों के परिणामस्वरूप हैं ।''

पढ़ने का अभ्यास हमें किस स्थिति तक ले जा सकता है इसका एक अच्छा उदाहरण है जोसेलिन बेनोएस्ट की उपलब्धि । जिसने जून 1983 में 14 वर्ष की आयु में फ्रांस में एक सुविख्यात 'खुला निबंध प्रतियोगिता' का प्रथम पुरस्कार जीता । जब संवाददाताओं ने उससे पूछा कि क्या वह शुरू से ही बहुत विलक्षण और अत्यधिक कुशाग्र रही है तो जोसेलिन ने कहा, ''नहीं । ये दोनों ही बातें नहीं हैं । बस मैं पढ़ी ही बहुत हूं ।* ◆

* रीडर्स डाइजेस्ट, अगस्त, 1983